www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

*** Vol-2* *Issue-4* *April 2025***

दिनकर के विशेषण विधान का साहित्यिक महत्व

डॉ0 सीमा तिवारी

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी, शक्ति स्मारक संस्थान, बलरामपुर, उ.प्र.

सारांशः

हिंदी साहित्य में रामधारी सिंह 'दिनकर' का नाम एक तेजस्वी कवि के रूप में लिया जाता है, जिनकी रचनाओं में ओज, भावना और राष्ट्रप्रेम का गहन समन्वय दिखाई देता है। दिनकर की भाषा जहाँ एक ओर संस्कृतनिष्ठ है, वहीं दूसरी ओर उसमें जनसामान्य की बोली–बानी की मिठास भी झलकती है। उनकी काव्य–शैली में विशेषणों का प्रयोग अत्यंत प्रभावी रूप में हुआ है, जो न केवल वर्णन को सजीव बनाते हैं, बल्कि भावनाओं की तीव्रता को भी गहराई प्रदान करते हैं। विशेषण विधान, किसी काव्य में भावात्मक चित्रण और सौंदर्यबोध को विस्तार देने का प्रमुख माध्यम होता है। दिनकर ने अपने काव्य में विशेषणों के माध्यम से विचार, चरित्र और दृश्य का ऐसा चित्रण प्रस्तुत किया है, जो पाठक के मन–मस्तिष्क पर स्थायी प्रभाव छोड़ता है। उनके वीर रस प्रधान काव्य, जैसे रश्मिरथी में 'प्रखर', 'तेजस्वी', 'सजल', 'वज्र–संग्राम' जैसे विशेषणों का प्रयोग पात्रों की मानसिकता, पराक्रम और विचारधारा को सजीव कर देता है। इसी प्रकार उर्वशी में श्रृंगार और करुण रस से युक्त विशेषण पाठक को एक सूक्ष्म भावलोक की यात्रा पर ले जाते हैं। दिनकर के विशेषण न केवल शब्द–शक्ति का विस्तार करते हैं, बल्कि सामाजिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक चेतना को भी आकार देते हैं। उनके द्वारा प्रयुक्त विशेषण, यथार्थ और कल्पना के मध्य सेतु का कार्य करते हैं, जिससे उनकी कविताएँ न केवल भावनात्मक रूप से समृद्ध होती हैं, बल्कि विचारधारा के स्तर पर भी पाठक को उद्वेलित करती हैं। दिनकर के विशेषण विधान की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह वर्णनात्मकता को केवल सजावट के रूप में नहीं, बल्कि अर्थगर्भिता और संप्रेषणीयता को प्रबल करने के लिए प्रयोग करते हैं। उनके विशेषणों में वैचारिक शक्ति, भावात्मक तीव्रता और भाषिक सौंदर्य का अद्वितीय समन्वय दिखाई देता है। इस प्रकार, दिनकर के विशेषण विधान का हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है। यह न केवल उनके काव्य को विशिष्ट बनाता है, बल्कि साहित्यिक सौंदर्य, भावनात्मक प्रभाव और भाषिक समृद्धि की दृष्टि से भी अत्यंत मूल्यवान सिद्ध होता है।

मुख्य–शब्दः दिनकर, विशेषण विधान, काव्य सौंदर्य, रश्मिरथी, उर्वशी, भावाभिव्यक्ति, वीर रस, श्रृंगार रस, भाषिक सौंदर्य, राष्ट्रकवि।

परिचय

हिंदी साहित्य के समकालीन इतिहास में रामधारी सिंह 'दिनकर' एक ऐसा नाम है, जो न केवल काव्य की ओजस्विता के लिए जाना जाता है, बल्कि भावनात्मक गहराई, सामाजिक चेतना और भाषिक सौंदर्य के लिए भी स्मरणीय बना हुआ है। उनका काव्य केवल विचारों की श्रृंखला नहीं है, बल्कि एक सजीव अनुभव है, जिसमें भाषा, भाव और विचारों का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। दिनकर के साहित्य में विशेष रूप से उनके विशेषण प्रयोग की जो शैली है, वह उनकी काव्य–प्रतिभा की अनूठी पहचान बन चुकी है। रामधारी सिंह 'दिनकर' (1908–1974) का साहित्यिक जीवन स्वतंत्रता संग्राम की पृष्ठभूमि में विकसित हुआ, जिसने उन्हें जन–मन की आकांक्षाओं और युगबोध की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बना दिया। उन्होंने अपने काव्य में परंपरा और आधुनिकता, देशभक्ति और मानवीय संवेदना का अद्भुत संतुलन स्थापित किया। उनकी प्रमुख काव्य रचनाओं

में रश्मिरथी, परशुराम की प्रतीक्षा, उर्वशी, संस्कृति के चार अध्याय जैसे ग्रंथों का महत्वपूर्ण स्थान है। दिनकर की काव्य रचनाएँ न केवल ओजपूर्ण हैं, बल्कि वे सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक चिंतन से भी परिपूर्ण हैं। राष्ट्रकवि के रूप में उनकी प्रतिष्ठा इसीलिए है क्योंकि उन्होंने राष्ट्र की आत्मा को अपनी कविताओं में जीवंत रूप में ढाला। उनकी भाषा में जहाँ एक ओर संस्कृतनिष्ठ शब्दों की गूंज है, वहीं दूसरी ओर जनसामान्य की सहज भाषा भी उपस्थित है। यह द्वैध भाषा शैली उन्हें अन्य समकालीन कवियों से विशिष्ट बनाती है। दिनकर के शब्द–चयन, विशेषतः विशेषणों का प्रयोग, उनकी काव्य–शैली को सशक्त, सजीव और प्रभावशाली बनाता है। वे विशेषणों के माध्यम से भावों को इस तरह साकार करते हैं कि पाठक दृश्य और अनुभूति को स्पष्ट रूप से महसूस कर पाता है।

कविता में विशेषणों का प्रयोग केवल भाषा की शोभा बढ़ाने के लिए नहीं होता, बल्कि यह काव्य की संवेदना और अर्थवत्ता को विस्तार देता है। विशेषण एक प्रकार का विशेषांक है जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताता है। काव्य में प्रयुक्त विशेषण दृश्य, भाव और चरित्र को गहराई प्रदान करते हैं। विशेषणों के माध्यम से कवि अपने विचारों को अधिक प्रभावशाली, चित्रात्मक और संप्रेषणीय बना सकता है। हिंदी काव्य परंपरा में विशेषणों का प्रयोग कालिदास से लेकर भारतेन्दु युग तक विकसित होता रहा, किंतु दिनकर ने आधुनिक भावभूमि पर खड़े होकर उन्हें राष्ट्रवाद, प्रेम, करुणा और संघर्ष जैसे विषयों से जोड़ा। दिनकर के विशेषण प्रयोग में एक विशेष प्रकार की ऊष्मा और ओज विद्यमान है। वे विशेषणों का प्रयोग केवल सजावटी भाषा के लिए नहीं, बल्कि वैचारिक शक्ति, भावनात्मक तीव्रता और सांस्कृतिक चेतना को व्यक्त करने के लिए करते हैं। जैसे 'प्रखर तेज', 'धधकता हृदय', 'वज्र–सी भुजा' जैसे विशेषण उनके काव्य में केवल शब्द नहीं, विचार और संवेदना के वाहक बन जाते हैं।

रामधारी सिंह दिनकर की काव्य प्रतिभा पर अब तक अनेक शोध हुए हैं, किंतु उनके विशेषण विधान पर केंद्रित विश्लेषण की कमी आज भी अनुभव की जाती है। यह शोध इस आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए किया जा रहा है कि किस प्रकार दिनकर के विशेषण प्रयोग उनके संपूर्ण काव्य–संसार को एक विशेष आयाम प्रदान करते हैं। दिनकर की कविताओं में प्रयुक्त विशेषण न केवल सौंदर्यबोध को बढ़ाते हैं, बल्कि पाठक की अनुभूति को भी उद्दीप्त करते हैं। इस शोध का प्रमुख उद्देश्य यह समझना है कि विशेषण विधान के माध्यम से दिनकर किस प्रकार एक प्रभावशाली काव्य–चित्र रचते हैं। साथ ही यह भी देखा जाएगा कि उनके विशेषण प्रयोग का सामाजिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक आयाम किस प्रकार विकसित होता है। यह शोध यह प्रमाणित करने का प्रयास करेगा कि विशेषणों के माध्यम से दिनकर ने हिंदी काव्य को एक नवीन भाषिक शक्ति प्रदान की, जो उनके साहित्य को कालजयी बनाती है।

रामधारी सिंह 'दिनकर' की काव्य–यात्रा

हिंदी साहित्य के आधुनिक युग में रामधारी सिंह 'दिनकर' एक ऐसी व्यक्तित्वपूर्ण और प्रभावशाली काव्य–शक्ति के रूप में सामने आते हैं, जिन्होंने अपने लेखन से न केवल राष्ट्रभक्ति और सामाजिक चेतना को स्वर प्रदान किया, बल्कि भाषा की आंतरिक शक्ति को भी जन–जन तक पहुँचाया। उनकी काव्य–यात्रा न केवल एक कवि के विकास की कहानी है, बल्कि यह उस समय के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक आंदोलनों की अभिव्यक्ति भी है, जिनसे भारतीय जनमानस गहराई से जुड़ा रहा। रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म 23 सितंबर 1908 को बिहार के बेगूसराय जिले के सिमरिया गाँव में एक सामान्य कृषक परिवार में हुआ था। उनका बचपन आर्थिक संघर्षों में बीता, लेकिन उन्होंने शिक्षा के प्रति अपनी गहरी निष्ठा बनाए रखी। पटना विश्वविद्यालय से इतिहास में स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के पश्चात उन्होंने शिक्षण और पत्रकारिता के क्षेत्र में कार्य किया। स्वतंत्रता संग्राम के समय उनके विचारों में राष्ट्रीय चेतना का उदय हुआ, जो बाद में उनकी कविताओं का मूल स्वर बना। वे राज्यसभा के सदस्य भी रहे और भारत सरकार में शिक्षा मंत्रालय में भी कार्यरत रहे। 1974 में उनका निधन हुआ, परंतु उनकी साहित्यिक धरोहर आज भी हिंदी साहित्य को समृद्ध कर रही है। दिनकर की रचनाएँ विविध विषयों और भावभूमियों को स्पर्श करती हैं। उनकी काव्य–यात्रा की शुरुआत रेणुका (1935) से होती है, जिसमें कोमल भावनाएँ और मातृत्व का चित्रण मिलता है। इसके बाद हुंकार (1941) और रश्मिरथी (1952) जैसी रचनाओं में उनका ओजस्वी स्वर मुखर हुआ। रश्मिरथी विशेष रूप से कर्ण के चरित्र पर आधारित महाकाव्यात्मक कविता है, जो सामाजिक विषमता, नीति–अनीति और मानवीय संघर्ष का अद्भुत चित्र प्रस्तुत करती है। परशुराम की प्रतीक्षा में उन्होंने आंतरिक आत्ममंथन और समाज में व्याप्त अन्याय के प्रति असंतोष को

काव्यात्मक रूप में प्रस्तुत किया। उर्वशी, जो उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार दिलाने वाली रचना रही, प्रेम, सौंदर्य और मानवीय संवेदना का दार्शनिक विश्लेषण प्रस्तुत करती है। संस्कृति के चार अध्याय एक वैचारिक ग्रंथ है, जो भारतीय संस्कृति के विकास क्रम और उसके उत्थान–पतन का विवेचन करता है।

दिनकर की भाषा उनके व्यक्तित्व की तरह ही प्रभावशाली, ओजस्वी और विविधतापूर्ण है। उनकी कविता में संस्कृतनिष्ठ हिंदी का प्रभुत्व होता है, जो उनके विषयों की गंभीरता और भावनाओं की तीव्रता को उचित रूप में प्रस्तुत करने में समर्थ है। उनके विशेषण प्रयोग विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं, जो न केवल भाषा को सौंदर्यपूर्ण बनाते हैं, बल्कि पाठक की कल्पना शक्ति को भी सजीव करते हैं। दिनकर की काव्य–भाषा में तात्कालिकता और ऐतिहासिकता दोनों का समन्वय दिखाई देता है। वे प्राचीन शब्दों के साथ आधुनिक प्रतीकों का प्रयोग करते हैं, जिससे उनकी कविता में समय का विस्तार और गहराई दोनों मिलती है। उनके यहाँ रूपकों, उपमाओं और विशेषणों का ऐसा प्रयोग मिलता है, जो अर्थ की बहुलता और भाव की तीव्रता को एक साथ व्यक्त करता है। उनकी भाषा जनमानस से जुड़ी होने के बावजूद अपने भीतर साहित्यिक ऊँचाइयों को समाहित करती है। रश्मिरथी के वीर रस से लेकर उर्वशी की श्रृंगारमयी भाषा तक, उनके काव्य में भाषिक विविधता स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। उनकी रचनाओं में प्रयुक्त विशेषण न केवल चित्रात्मक होते हैं, बल्कि वे भावों के घनत्व को भी बढ़ाते हैं।

विशेषण का भाषा शास्त्रीय विश्लेषण

भाषा का मूल उद्देश्य संप्रेषण है, किंतु जब वही भाषा काव्य के क्षेत्र में प्रवेश करती है, तो उसमें भावों की सघनता, कल्पना की उड़ान, और सौंदर्य का समावेश आवश्यक हो जाता है। काव्य–भाषा को प्रभावशील बनाने में विशेषणों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। विशेषण न केवल संज्ञाओं की विशेषता प्रकट करते हैं, बल्कि वे वर्णन को चित्रात्मक, संवेदनशील और अर्थपूर्ण बनाने का कार्य भी करते हैं। भाषाविज्ञान की दृष्टि से विशेषण वह पद है, जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताता है और उसे अधिक स्पष्ट, सजीव एवं अर्थपूर्ण बनाता है। यह शब्दवर्ग संज्ञा के लक्षण, गुण, मात्रा, संख्या, रंग, रूप आदि को उद्घाटित करता है। हिंदी भाषा में प्रयुक्त विशेषणों को सामान्यतः तीन वर्गों में विभाजित किया जाता है– गुणवाचक, संख्यावाचक एवं परिमाणवाचक विशेषण।

गुणवाचक विशेषण वे होते हैं जो संज्ञा के गुण, स्वरूप, रूप या स्थिति को बताते हैं, जैसे– सुंदर, तेज, विशाल, गंभीर। संख्यावाचक विशेषण किसी संज्ञा की संख्या को व्यक्त करते हैं, जैसे– दो, पाँचवां, अनेक, कुछ। वहीं परिमाणवाचक विशेषण किसी वस्तु की माप या परिमाण को सूचित करते हैं, जैसे– अधिक, थोड़ा, पूरा, पूरा। इन तीनों प्रकार के विशेषण, काव्यात्मक प्रयोगों में भावाभिव्यक्ति को सशक्त करने के लिए प्रयुक्त होते हैं। विशेषणों का चयन कवि की भाषिक कुशलता और भावनात्मक गहराई का परिचायक होता है।

काव्य भाषा में विशेषणों का प्रयोग केवल सजावटी उद्देश्य की पूर्ति के लिए नहीं होता, बल्कि वे भाव, चरित्र, वातावरण और प्रतीकात्मक अर्थों को विकसित करने का सशक्त माध्यम बनते हैं। विशेषणों के द्वारा कवि दृश्य को मूर्त रूप प्रदान करता है और पाठक को अनुभव के उस स्तर तक पहुँचाने का प्रयास करता है, जहाँ शब्द मात्र संकेत नहीं, बल्कि अनुभूत सत्य बन जाते हैं। दिनकर की काव्य–भाषा में विशेषणों का प्रयोग अत्यंत प्रभावशाली रूप में हुआ है। उनके विशेषण पात्रों की मनःस्थिति, सामाजिक संदर्भ, ऐतिहासिक घटनाओं और आंतरिक द्वंद्व को सजीव करते हैं। जैसे रश्मिरथी में 'वज्रनिष्ठ' कर्ण, 'तेजस्वी' रथ, 'धधकते' वचन जैसे विशेषण न केवल काव्य को ओज प्रदान करते हैं, बल्कि कथ्य की गहराई को भी सशक्त करते हैं। काव्य में प्रयुक्त विशेषण भावों की तीव्रता और अर्थ की गहनता को कई गुना बढ़ा देते हैं। वे भाषा को जीवंत बनाते हैं और पाठक की कल्पना शक्ति को प्रेरित करते हैं। विशेषणों के कारण ही काव्य की भाषा में चित्रात्मकता, संप्रेषणीयता और भाव–संवेदनशीलता का समन्वय संभव हो पाता है।

हिंदी भाषा में विशेषणों के स्रोत विविध हैं। प्रमुखतः विशेषण तीन भाषिक स्त्रोतों से आते हैं कृ संस्कृतनिष्ठ, तद्भव और देशज। प्रत्येक स्रोत से प्राप्त विशेषण काव्य में अलग–अलग प्रकार की भाषिक गरिमा और संवेदना का निर्माण करते हैं। संस्कृतनिष्ठ विशेषण, जैसे प्रखर, तेजस्वी, विकराल, शांत कृ गंभीरता, ओज और उच्चकोटि के भावों को प्रकट करने में सहायक होते हैं। दिनकर की काव्य भाषा में इन विशेषणों की प्रमुखता देखी जाती है, जिससे उनके काव्य को एक शास्त्रीय और गंभीर स्वरूप प्राप्त होता है। तद्भव विशेषण, जैसे गरम, मीठा, बड़ा, सुंदर–अधिक सहज और लोकजीवन से जुड़े प्रतीत होते हैं। दिनकर जब सामाजिक सरोकारों पर बात

करते हैं, तो इन विशेषणों के माध्यम से वे आम जन की भावनाओं को व्यक्त करते हैं। देशज विशेषण, जैसे चटपटा, झक्कास, भोंदू– यद्यपि दिनकर की काव्य–भाषा में इनका प्रयोग सीमित है, फिर भी जहां–जहां प्रयुक्त हुए हैं, वहाँ उन्होंने व्यंग्य या लोक–स्वर के लिए वातावरण निर्मित किया है।

दिनकर की रचनाओं में विशेषण विधान का स्वरूप

रामधारी सिंह 'दिनकर' की काव्य–दृष्टि केवल भाव और विचारों तक सीमित नहीं है, बल्कि वह भाषिक सौंदर्य और अभिव्यक्ति की विशिष्टता के माध्यम से पाठकों के भाव–जगत को गहराई से स्पर्श करती है। उनके काव्य की यह विशेषता विशेष रूप से उनके विशेषण–विधान में परिलक्षित होती है। दिनकर के विशेषणों का प्रयोग मात्र भाषा की सज्जा नहीं, बल्कि भावाभिव्यक्ति का एक सशक्त उपकरण बन जाता है। उनकी विविध रचनाओं में प्रयुक्त विशेषण, रस के अनुरूप वातावरण निर्माण और पात्रों की मानसिकता के प्रस्तुतीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। दिनकर के काव्य की सबसे प्रभावशाली विधा वीर रस है, जिसकी श्रेष्ठ अभिव्यक्ति रश्मिरथी में देखी जा सकती है। यह महाकाव्य महाभारत के कर्ण जैसे उपेक्षित और संघर्षशील पात्र को केंद्र में रखकर रचा गया है। कर्ण की वीरता, आत्मबल, और आंतरिक संघर्ष को चित्रित करने में दिनकर ने विशेषणों का अद्‌भुत प्रयोग किया है। जैसे– "वज्र–सा कठोर", "अग्नि–सा प्रज्वलित", "तेजस्वी योद्धा", "धधकती आँखें", "विराट व्यक्तित्व" ऐसे विशेषण न केवल कर्ण के चरित्र को जीवंत करते हैं, बल्कि पाठक के मन में एक विशिष्ट छवि और वातावरण का निर्माण भी करते हैं। इन विशेषणों में न केवल काव्यात्मक ओज है, बल्कि यथार्थ की अनुभूति भी निहित है। दिनकर का यह विशेषण प्रयोग वीर रस के मूल गुण– उत्साह, गर्व, क्रोध और पराक्रम को सजीव बनाता है। कविता की भाषा में वीरता का वर्णन मात्र शौर्य के चित्रण से संभव नहीं होता; उसके लिए आवश्यक होता है कि भावों को समर्थ शब्दों से सजाया जाए। दिनकर के विशेषण–चयन में यह सामर्थ्य स्पष्टतः परिलक्षित होती है।

हालाँकि दिनकर की प्रमुख पहचान ओज और राष्ट्रवाद से जुड़ी रही है, परंतु उनके काव्य में श्रृंगार और करुण रस की भी सुंदर अभिव्यक्तियाँ मिलती हैं, विशेषतः उर्वशी जैसी काव्यकृति में। इस रचना में विशेषणों का प्रयोग कोमलता, सौंदर्य और मानवीय भावनाओं की सूक्ष्मता को उद्‌घाटित करने हेतु किया गया है। उदाहरण के रूप में "कोमल अधर", "मृदुल स्पर्श", "नयनों की नमी", "नीलाम्बर–सी आभा", "विरह की गहराई" जैसे विशेषण नारी सौंदर्य, प्रेम की आकुलता और आत्मीयता के गहन भाव को प्रकट करते हैं। इन विशेषणों में न केवल भाषा की कलात्मकता निहित है, बल्कि वे पाठक को चरित्र की भावनात्मक स्थिति से जोड़ते हैं। करुण रस की अभिव्यक्ति में दिनकर के विशेषणों का प्रयोग अत्यंत संवेदनशील हो जाता है। जैसे– "विधुर हृदय", "विलुप्त आशा", "निर्जीव नेत्र", "अवसाद भरे स्वर" आदि विशेषणों के माध्यम से वे पीड़ा, विषाद और मानवीय दुर्बलता को प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत करते हैं। यह भाषा में केवल भाव का ही नहीं, बल्कि गहन संवेदना का संचार भी करता है।

दिनकर के साहित्य में राष्ट्रवाद एक केंद्रीय भाव रहा है। हुंकार, परशुराम की प्रतीक्षा, तथा संस्कृति के चार अध्याय जैसी रचनाओं में वे विशेषणों के माध्यम से सामाजिक यथार्थ और राष्ट्र की पीड़ा को अभिव्यक्त करते हैं। "दासता की जंजीर", "क्रांतिमय स्वप्न", "उबलता जनाक्रोश", "स्वर्णिम भविष्य", "विचलित आत्मा" जैसे विशेषणों में एक ओर वर्तमान की विडंबना है तो दूसरी ओर भविष्य की आशा और चेतना। इन विशेषणों के प्रयोग से वे कविता को आंदोलनात्मक स्वर देते हैं। दिनकर का यह विशेषण–प्रयोग पाठक को केवल विचारशील नहीं बनाता, बल्कि उसे आंतरिक रूप से झकझोरता है। उनके सामाजिक काव्य में प्रयुक्त विशेषण जनमानस की पीड़ा, अन्याय के विरुद्ध संघर्ष और चेतनाशीलता का संचार करते हैं। यह विशेषण विधान दिनकर की भाषा को जनचेतना का माध्यम बनाता है और यही उनकी काव्यभाषा को शास्त्रीयता के साथ–साथ जनमान्यता भी प्रदान करता है।

विशेषण विधान की साहित्यिक गरिमा

किसी भी काव्य की प्रभावशीलता उस भाषा–शैली पर निर्भर करती है, जिसमें भावों को प्रस्तुत किया जाता है। भाषा के भीतर प्रयोग किए गए विशेषण, कविता को सजीव, संवेदनशील और सौंदर्यपरक बनाने का कार्य करते हैं। विशेषणों का विधान जब किसी कवि की संवेदना और विचार के साथ गहराई से जुड़ता है, तो वह केवल व्याकरणिक प्रयोग नहीं रह जाता, बल्कि साहित्यिक गरिमा का प्रतीक बन जाता है। रामधारी सिंह 'दिनकर' के काव्य में विशेषणों का जो प्रयोग मिलता है, वह उनकी भाषा की कलात्मकता, भावप्रवणता और

विचारधारा का अद्‌भुत संगम प्रस्तुत करता है। भावों की सशक्त प्रस्तुति किसी काव्य की आत्मा होती है, और विशेषणों के माध्यम से कवि इस आत्मा को शब्दों में ढालता है। विशेषण जब किसी संज्ञा के साथ जुड़ते हैं, तो वह वस्तु, पात्र या भाव एक नया अर्थ प्राप्त करता है। दिनकर की कविताओं में विशेषण केवल अलंकरण नहीं, बल्कि गहन भावों की वाहक इकाई के रूप में कार्य करते हैं। उदाहरण के रूप में यदि हम रश्मिरथी में कर्ण के चित्रण को देखें, तो 'वज्रनिष्ठ', 'तेजस्वी', 'दीनों का रक्षक' जैसे विशेषण न केवल उसकी भौतिक या मानसिक स्थिति का वर्णन करते हैं, बल्कि उसकी सामाजिक चेतना, आत्मगौरव और जीवन–दृष्टि को भी प्रकट करते हैं। यह भावाभिव्यक्ति की वह उच्च अवस्था है, जहाँ विशेषण संज्ञा को पार करके संवेदना का रूप ले लेता है। दिनकर की भाषा में विशेषणों का यह प्रयोग पाठक के भीतर गहरी अनुभूति उत्पन्न करता है। उनका हर विशेषण किसी भाव को स्पष्ट करता है और उसे भीतर तक महसूस करने योग्य बना देता है।

काव्य में सौंदर्यबोध की सृष्टि केवल विषय–वस्तु या भावों से नहीं होती, बल्कि भाषा के चयन और शब्दों के संयोजन से होती है। दिनकर अपने विशेषणों के माध्यम से कविता में एक चित्रात्मक वातावरण की रचना करते हैं। जैसे– "नील–वर्ण आकाश", "धधकता रथ", "स्वर्णिम प्रभा", "सजल नयन", "कोमल गात" ये विशेषण दृश्य को केवल शब्दों तक सीमित नहीं रखते, बल्कि एक चित्र की भाँति पाठक के समक्ष प्रस्तुत करते हैं। इस चित्रात्मकता में सौंदर्य का वह भाव समाहित होता है, जो पाठक के मन में स्थायी छवि छोड़ जाता है। दिनकर के विशेषण प्रयोग से यह स्पष्ट होता है कि वे किसी वस्तु या चरित्र को उसके शाब्दिक स्वरूप से अधिक, उसकी आंतरिक अनुभूति के साथ प्रस्तुत करते हैं। विशेषणों की यह चित्रात्मकता कविता को स्थूल से सूक्ष्म और यथार्थ से कल्पना की ओर प्रवाहित करती है।

काव्य का अंतिम लक्ष्य पाठक के मन पर प्रभाव डालना और उसमें भावों की गति उत्पन्न करना होता है। दिनकर के विशेषण विधान की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि वह पाठक के अंतर्मन को छूता है और उसमें एक भाव–संवेदन की लहर उत्पन्न करता है। जैसे परशुराम की प्रतीक्षा में "उद्वेलित समाज", "ध्वस्त मर्यादा", "विकृत चेतना" जैसे विशेषण वर्तमान यथार्थ की क्रूरता और उसमें छिपी असंतोष की ज्वाला को पाठक तक पहुँचाते हैं। ऐसे विशेषण केवल भाषा का विस्तार नहीं करते, वे विचार का विस्तार भी करते हैं। दिनकर के विशेषण गहराई के साथ साथ गति भी प्रदान करते हैं। वे पाठक को स्थिर नहीं रहने देते, बल्कि उसे झकझोरते हैं, सोचने के लिए बाध्य करते हैं और उसे काव्य की गहराई में उतरने की प्रेरणा देते हैं।

दिनकर की तुलना में अन्य समकालीन कवियों का विशेषण प्रयोग

हिंदी काव्य परंपरा में बीसवीं शताब्दी का मध्यकाल अनेक दृष्टियों से अत्यंत महत्त्वपूर्ण रहा है। इस काल में भाषा, भाव और शैली के स्तर पर कई प्रयोग हुए, जिनके माध्यम से हिंदी कविता ने व्यापक सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक संदर्भों को आत्मसात किया। इस दौर के प्रमुख कवियों में रामधारी सिंह 'दिनकर', सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा, मैथिलीशरण गुप्त और निराला जैसे नाम प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं। इन सभी कवियों ने अपने–अपने काव्य में विशेषणों का प्रयोग भाव–संप्रेषण और सौंदर्यवृद्धि के उद्देश्य से किया, परंतु दिनकर का विशेषण–विधान जिस प्रकार वैचारिक शक्ति, भावनात्मक तीव्रता और सामाजिक चेतना से जुड़ता है, वह उन्हें समकालीन कवियों में विशिष्ट बनाता है।

महादेवी वर्मा की कविताओं में विशेषणों का प्रयोग अत्यंत कोमल, सौम्य और सूक्ष्म भावों की अभिव्यक्ति के लिए किया गया है। जैसे "नील नयन", "विरह–विह्वल", "कोमल स्मृति" आदि विशेषण उनके करुण और श्रृंगारिक भावों की सूक्ष्मता को उजागर करते हैं। उनका विशेषण प्रयोग आंतरिक अनुभूतियों की मार्मिक प्रस्तुति में सहायक है। सुमित्रानंदन पंत की कविता में प्रकृति प्रमुख विषय रही है। उनके विशेषणों में प्रकृति के रंग, रूप और सौंदर्य का गहन चित्रण मिलता है कृ जैसे "हरित पर्वत", "गगन–नयन", "प्रभा–पूरित नभ" आदि। पंत के विशेषण सौंदर्यबोध और चित्रात्मकता के प्रभाव को बढ़ाने के लिए प्रयुक्त होते हैं। निराला के काव्य में विशेषणों का प्रयोग अधिक यथार्थपरक और सामाजिक सन्दर्भों के साथ देखने को मिलता है। उनके यहाँ "विषाक्त जीवन", "टूटती आत्मा", "विदग्ध मन" जैसे विशेषण सामाजिक विडंबनाओं को उद्‌घाटित करते हैं।

दिनकर का विशेषण प्रयोग केवल शब्दों की सजावट नहीं, बल्कि विचारों और संवेदनाओं की तीव्र प्रस्तुति का माध्यम है। उनके विशेषणों में शक्ति, उग्रता, विवेक, विद्रोह और सामाजिक चेतना की स्पष्ट झलक मिलती है। उदाहरण के लिए रश्मिरथी में प्रयुक्त "वज्र–संकल्पित", "धधकते वचन", "तेजस्वी योद्धा" जैसे विशेषण किसी दृश्य या पात्र को केवल चित्रित नहीं करते, बल्कि उसमें छिपी चेतना को उजागर करते हैं। इसी प्रकार परशुराम

माध्यम न बनाकर, उसे भावों की शक्ति और विचारों की उष्णता से भर दिया। इस शोध के माध्यम से दिनकर के विशेषण प्रयोग का भाषा–सौंदर्य, रस–संवेदना, और सामाजिक चेतना में योगदान स्पष्ट रूप से सामने आता है। दिनकर के विशेषण–प्रयोग ने हिंदी कविता में भाषिक सघनता, भावात्मक तीव्रता और बौद्धिक ऊँचाई का संतुलन स्थापित किया। वे केवल वीरता और ओज के कवि नहीं रहे, बल्कि उनकी भाषा ने करुणा, प्रेम, विरोध, चेतना और सौंदर्य सभी भावभूमियों को स्पर्श किया। उनके विशेषणों ने वर्णन को जीवंत, पात्रों को मानवीय और भावों को प्रभावशाली बना दिया। दिनकर के विशेषण प्रयोग में यह साहित्यिक गुण भी निहित है कि वे कविता को किसी एक भाव या अर्थ तक सीमित नहीं करते, बल्कि बहुअर्थकता और भावविस्तार की संभावनाओं को जन्म देते हैं। यह गुण उनके काव्य को समय और पीढ़ियों की सीमाओं से ऊपर उठाकर कालजयी बना देता है। इस प्रकार, दिनकर का विशेषण विधान न केवल उनकी काव्यशैली का केंद्रीय तत्व है, बल्कि हिंदी साहित्य में भाषा की शक्ति, सौंदर्य और उद्देश्य की त्रयी को साकार करने वाला माध्यम भी है। आने वाले शोध इस विधा को और भी समृद्ध कर सकते हैं।

संदर्भ–

1. गुप्त, म. (1961). आज के लोकप्रिय कविः रामधारी सिंह 'दिनकर'. दिल्ली, राजपाल एंड सन्स।
2. सिंह, र. (1996). कहानीः नई कहानी. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन।
3. तिवारी, र. (1962). 'दिनकर' की उर्वशी. वाराणसी, विद्या भवन।
4. दिनकर, र. स. (1946). मिट्टी की ओर. पटना, उदयाचल प्रकाशन।
5. दीक्षित, च. (1976). रेणुकाः दिनकर का रचना संसार. इलाहाबाद, प्रतिभा प्रकाशन।
6. दिनकर, र. स. (2002). हुँकार. इलाहाबाद, लोक भारती प्रकाशन।
7. दिनकर, र. स. (1963). परशुराम की प्रतीक्षा. इलाहाबाद, लोक भारती प्रकाशन।
8. दिनकर, र. स. (प्रकाशन वर्ष नहीं दिया गया). बापू. इलाहाबाद, लोक भारती प्रकाशन।
9. दिनकर, र. स. (2004). कुरूक्षेत्रा. नई दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्स।
10. नागेन्द्र. (1980). आस्था के चरण. नई दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
11. मिश्रा, स. (1983). दिनकर की साहित्य दृष्टि. पटना, अनुपम प्रकाशन।
12. राय, ग. (1975). राष्ट्रकवि दिनकर. पटना, ग्रंथ निकेतन।

Cite this Article-

'डॉ0 सीमा तिवारी', 'दिनकर के विषेशण विधान का साहित्यिक महत्व', Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:2, Issue:04, April 2025.

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/

DOI- 10.70650/rvimj.2025v2i4002

Published Date- 05 April 2025